४. मेरा भला करने वालों से बचाएँ

– डॉ. राजेंद्र सहगल

लेखक परिचय : राजेंद्र सहगल जी का जन्म २४ अगस्त १९५३ को हुआ । आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए., पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की । आप बैंक में उपप्रबंधक के रूप में कार्यरत रहें । आप आकाशवाणी से विभिन्न विषयों पर वार्ताओं का प्रसारण करते हैं तथा सामयिक महत्त्व के विषयों पर फीचर लेखन भी करते हैं । स्तरीय पत्र पत्रिकाओं में आपके लगभग पचास व्यंग्य लेख प्रकाशित हुए हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'हिंदी उपन्यास', 'तीन दशक' (शोध प्रबंध), 'असत्य की तलाश', 'धर्म बिका बाजार में' (व्यंग्य-संग्रह)

विधा परिचय : हिंदी गद्य की विभिन्न विधाओं में 'व्यंग्य' का प्रमुख स्थान है। अतिशयोक्ति, विडंबना, विसंगतियाँ, अन्योक्ति तथा आक्रोश प्रदर्शन व्यंग्य के प्रमुख उपादान हैं। व्यक्ति का दोमुँहापन, दोगलापन, पाखंड, चालाकी, धूर्तता, इतने परदों के पीछे छिपी रहती है कि केवल व्यंग्य रचनाकार ही अपनी पैनी नजर से उसे देख पाता है । वह व्यक्तिगत राग-द्वेष से मुक्त होकर व्यक्ति के इस पाखंड को पकड़ता है । किसी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, वर्ग आदि का मजाक उड़ाना व्यंग्यकार का उद्देश्य नहीं होता, बल्कि पाठकों को वह एक साफ-सुथरा दृष्टिकोण देना चाहता है । भावातिरेक के बजाय भावों की तरलता ही व्यंग्य लेखक की वास्तविक कुंजी हो सकती है । श्रीलाल शुक्ल, हरिशंकर परसाई, के.पी. सक्सेना, रवींद्रनाथ त्यागी, शरद जोशी, शंकर पुणतांबेकर आदि ने व्यंग्य साहित्य को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है।

पाठ परिचय : प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार का मानना है कि झूठ को सच बताने में जो ताकत लगती है उसका सौंवाँ हिस्सा भी सच को सच साबित करने में नहीं लगता परंतु झूठ को ही सही कहना आधुनिक काल का फैशन है । आज 'एक चीज के ऊपर दूसरी चीज फ्री' इस लालच में फँसे व्यक्ति की परेशानियाँ बताते हुए 'मुफ्त' के चक्कर में अपना भला करने वाले हमारे आस-पास कई सारे लोग दिखाई देते हैं, उनसे 'मुझे बचना है' कहकर इस प्रवृत्ति पर व्यंग्य कसा है ।

इधर मैं कई दिनों से बड़ा परेशान चल रहा हूँ । सब मेरा भला करना चाहते हैं । अखबार पढ़ने बैठता हूँ तो समाचार पढ़ने से पहले ढेर सारे कागज साथ में आ जाते हैं । कोई कहता है आपके द्वार पर आकर बैठे हैं । सभी तरह के इलाज के लिए क्लीनिक खोल दिया है । आप मोटे हैं तो पतला कर देंगे । पागल हैं तो ठीक कर देंगे । क्लीनिक से हर स्लिमिंग सेंटरवाला कह रहा है, 'बस ! आप आ जाएँ, बाकी सब हम पर छोड़ दें । हलवाई की दुकानवाला कह रहा है, 'ऐसी मिठाई आपने कभी न खाई होगी । मीठा खाएँ पर मीठे का असर न हो', ऐसी चीनी का इस्तेमाल करते हैं वे ।

क्रेडिट कार्डवाला फ्री डेबिट कार्ड दे रहा है । पैसे खर्च करने या नकद खर्च की कोई जरूरत पहले नहीं है । आप बेवजह पैसे के पीछे दौड़ रहे हैं । हम सामान आपके घर लाना चाहते हैं, आप बस माल खरीदें ! गाड़ीवाला नई गाड़ी के कागज दिए जा रहा है । साथ में लोन देने वाला बैंक के कागज भी दिए जा रहा है । अखबार के साथ पेंफलेट इतने ज्यादा हैं कि उन्हें पढ़ने बैठ जाओ तो अखबार पढ़ने के लिए वक्त नहीं बचेगा ।

जिसे देखो, वही हमारी चिंता कर रहा है । मुस्कुराती, चहचहाती लड़कियों के झुंड के झुंड आपके पास किसी भी प्रदर्शनी को देखते वक्त आ जाएँगे । आपको लगेगा, हमने ऐसी क्या उपलब्धि पा ली है कि सभी हमारा आटोग्राफ लेना चाहते हैं । वे फार्म भरवा रही हैं । इनाम के लालच में फार्म के साथ कुछ उम्मीदें बँधाकर जा रही हैं । घर में बैठा हूँ, कोई साफ पानी पीने के लिए वॉटर फिल्टर लगाना चाह रहा है । पैसे की तो कोई बात ही नहीं करता, पैसे आते रहेंगे । आप बस, फार्म भर दीजिए । सब कुछ आसान किस्तों में है, पता ही नहीं चलेगा । क्रेडिट कार्डवाला नियमित रूप से विवरण भेज रहा है । आप बस पेट्रोल भरवाते रहें । साबुन माँगो तो कोई एक टिकिया देता ही नहीं । सीधे कम-से-कम चार टिकियाँ पकड़ाएँगे जिसमें एक मुफ्त ।

हर जगह एक फ्री का इतना चलन है कि लगता है सब जगह भाईचारा बढ़ गया है । कोई खाने की चीज छोटी नहीं रही । सीधे 'लार्जर दॅन लाइफ' हो गई है । पहले ज्यादा खाओ फिर पचाने के लिए पाचक गोलियाँ खाओ । इससे पहले की है, किसी ने किसी की इतनी चिंता ! लोग कोसते रहते हैं कि दुनिया से प्यार-मुहब्बत कम होती जा रही है । यह उनकी समझ की कमी है ? प्यार तो दोगुना-चौगुना बढ़ा है ।

पार्क घूमने जाता हूँ तो योग संस्थानवाले घेर लेते हैं । कहते हैं, सिर्फ घूमने से और सैर करने से क्या होगा । वे मुझे 'योगा' के फायदे समझाते हैं । मैं उन्हें अपने वक्त की समस्या और थोड़ा बहुत घर के कामकाज की समस्या बताता हूँ । पर वे इसे दुनियादारी मानकर मुझे सीख देने लगते हैं । वे हर जगह कॉंपीटिशन पैदा करना चाहते हैं । मैंने अपना पक्ष रखते हुए उन्हें बताया कि मैं इस सैर से ही फिट रहता हूँ । पर वे इसे मेरी नासमझी मान मुझे 'योगा' के फायदे ही बताए जा रहे हैं । अगले दिन सैर करने के लिए मुझे दूसरा पार्क देखना पड़ता है ।

मैं पिछले कुछ वक्त पहले इन 'योगा' वालों से प्रभावित रहा पर अब मेरा मोह भंग हो गया है । हुआ यूँ कि पार्क में घूमते-घूमते मैं इनके ठहाके सुनकर बड़ा अचंभित हुआ, सोचता कि आज के इस वक्त में ठहाके लगाने के लिए आखिर इनके पास नुस्खा क्या है । मैं भी कुछ सकुचाते और घूमने का बहाना बना उनके दायरे में शामिल हो गया । वहाँ जाकर पता चला कि उनका ठहाका लगाने का आधार था कि वे एक-दूसरे को चुटकुले सुनाते, जिस पर सभी समवेत स्वर में ठहाका लगाकर हँसते । मुझे ठहाका न लगाते देख और अपनी हँसी में योगदान न देते देख हैरान होते । बाद में मुझे इन चुटकुलों की समझ न रखने वाला मान माफ कर देते । मुझे जल्दी ही इन ठहाकों का राज समझ में आ गया और मैं अपने रास्ते वापस आ गया ।

एक दिन दो युवा आए । कहने लगे, अखबार के दफ्तर से आए हैं । फिल्में दिखाते हैं और आपकी राय के लिए आपको आमंत्रित करेंगे । अच्छा लगा । उन्होंने फौरन काम शुरू कर दिया । जैसे ही मुझे किसी काम में व्यस्त देखा तो हस्ताक्षर के लिए कागज आगे कर दिया । पढ़ने को वक्त की बर्बादी समझ उन्होंने हस्ताक्षरवाली जगह बताकर मेरे हस्ताक्षर करवा लिए । वही हुआ था, जो होना था । थोड़े दिनों बाद एक चमचमाता क्रेडिट कार्ड आ गया । सारे मामले की छानबीन करने पर पता चला कि वे देश के भावी कर्णधार बेशक अखबार के ऑफिस से आए थे पर उनका किसी विदेशी बैंक से कॉंट्रेक्ट था । इस कॉंट्रेक्ट के चलते उन्हें क्रेडिट कार्ड बनवाने का लक्ष्य पूरा करना था ।

फिल्म देखने जाता हूँ । टिकट के साथ खाने का सामान शामिल कर लिया जाता है । मैं खाने की मनाही करता हूँ । मुझे कुछ इस तरह से समझाया जाता है, 'तीन घंटे की फिल्म में कोई भूखा-प्यासा थोड़े ही बैठेगा फिर खाने-पीने की लाइन में आपका लगना हमें अच्छा नहीं लगेगा ।' उसे पता है भूख तो लगेगी । वह दूरदर्शी है । उससे दूसरे की भूख बरदाश्त नहीं होती । लाईन में लगने से कष्ट होगा । पहले ही इंतजाम कर देता है । मेरे द्वारा कोई तर्क करने से पहले ही तुरुप का पत्ता फेंकते हुए मुझे बताया जाता है 'श्रीमान टिकट के साथ तो हम आधे पैसे चार्ज करते हैं । यह स्कीम आपके फायदे को ध्यान में रखकर ही जन कल्याण के लिए कुछ दिन पहले ही लाई गई है ।' मैं जन कल्याण का फायदा उठाने के लिए और बहस नहीं करता । १०/- के पॉपकॉर्न १००/- में खाकर उनका एहसान मानने लगता हूँ ।

'मॉल' में कपड़ों की सेल लगी है । माल बेचने वाला चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है । '१५००/- की साड़ी ३५०/- में, १०००/- का कुर्ता २००/- में ।' मैं जिज्ञासा वश पूछ बैठता हूँ ''आप इतना सस्ता माल देकर अपना दीवाला क्यूँ पिटवा रहे हो ।'' वह झट से कहता है ''मैं भारत माँ का सपूत हूँ । मुझे अपने देशवासियों से प्यार है ।

मैं इस धरती का कर्ज उतारना चाहता हूँ ।'' दरअसल वह सेकेंड का सस्ता माल बेचने के लिए अपने को धरती का लाल कहता है । वह अपने बलिदान के लिए उतारू है । वह व्यापारी है । हर चीज बेच लेता है । अपना कर्ज उतार रहा है । मैं निरुत्तर हो जाता हूँ । मैं उस महान आत्मा के सामने नतमस्तक हूँ ।

कोई दुकानवाला त्योहारों पर होने वाली छुट्टियों की अग्रिम सूचना दे रहा है । फलाँ-फलाँ तारीख को दुकान बंद रहेगी । आज ही जरूरत का सामान जमा कर लो । हमें तो आपकी बड़ी चिंता रहती है । हमें पता है, इसके बिना रह नहीं पाओगे । दोगुनी कीमत में पाने के लिए दर-दर भटकोगे । फिर लोग कहते हैं, मनुष्य में संवेदनशीलता खत्म होती जा रही है । जब तक हम रहेंगे, मनुष्यता बची रहेगी ।

बाजार की चिल्लपों से घबराकर घर आता हूँ । मनोरंजन के लिए टीवी ऑन करता हूँ । समाचार चैनल खबरों के नाम पर डरा रहे हैं । मौसम का हाल जानना चाहता हूँ तो ४५ डिग्री के तापमान को कुछ इस तरह बताया जा रहा है 'गर्मी की तपिश से जनता बेहाल । आकाश से आग की बरसात । आप अगर जीवित रहना चाहते हैं और अपना भला चाहते हैं तो घर से बाहर न निकलें ।' आपका गर्मी से आया पसीना अब आपको पूरी तरह नहला देगा । इसी तरह सर्दी के खौफनाक वर्णन से आप रजाई में भी कँपकँपी महसूस कर सकते हैं । असल बात दर्शकों का मनोरंजन है । खबर भी पता चल जाए और मनोरंजन भी हो जाए । यह तो सोने पे सुहागावाली बात हो गई । वह एक खबर को दस बार अलग-अलग तरीके से फिर-फिर दोहराएगा । वह सबका भला चाहता है । उसका साध्य पवित्र है । साधन से समझौता कर ले पर साध्य साफ होना चाहिए । दरअसल यह हमारा भला चाहने वाले हैं जिनकी चिंता को हम ठीक से समझ नहीं पा रहे । गर्मी-सर्दी, सूखा-बाढ़ के प्रकोप से आदमी बच भी जाए, इनकी भाषा के मर्मांतक प्रहार से मरना लाजिमी है ।

मेरे मोहल्ले में 'पुरुष ब्यूटी पार्लर' खुल गया है । मुझे अपने पैर के लंबे नाखून कटवाने हैं । वह मेरा 'फेशियल' करना चाहता है । उसका कहना है, नाखून तो जुराबों में छिप जाएँगे पर मुँह तो सबको नजर आएगा । वह मेरी 'फेस वेल्यू' बढ़ाना चाहता है । मैं पैर के लंबे नाखून कटवाने पर अड़ा हूँ । पता नहीं क्या सोचकर वह मेरी बात मान गया । उसने मेरे पैर पानी में रखवाए । फिर बड़ी देर तक मेरे पैरों के नाखूनों को घिसता रहा । मुझे आज से पहले अपने नाखून इतने महत्त्वपूर्ण कभी नहीं लगे । वह मेरे मुड़े नाखून को सीधा करने लगा । बड़े तरीके से नये-नये औजारों से घिसने लगा । लगा, कोई संगमरमर की मूर्ति तराश रहा है । मैंने एतराज किया तो उसने मेरे एतराज पर घोर एतराज किया । उसने पैर के बड़े नाखून से होने वाली तकलीफों पर व्याख्यान दिया । उसने इसे नाखून कटवाने की जगह 'पैडीक्योर' नाम दिया । वह बड़ा लुभावना नाम था । मैं मान गया । मैं उसके तर्कों से खुशी-खुशी हार गया । उसने नाखून काटने के सिर्फ १०००/- लेकर मुझे मुक्त कर दिया ।

रास्ते से जा रहा था । एक लंबी कतार ने मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया । उस कतार में मैंने झाँककर देखा कतार मोबाइल खरीदने वालों की थी । चिल्ला-चिल्लाकर स्पीकर पर सूचना दी जा रही थी । ''मोबाइल खरीदो और सिम कार्ड मुफ्त में पाओ, टॉक टाइम भी साथ में ले जाओ''। सुनकर मैं भी मोबाइल कतार का एक हिस्सा बन गया और उस भीड़ में दिनभर खड़े होकर मोबाइल का मालिक बन गया । उस दिन से जेब में घंटियाँ बजने की राह देखता रहा ।

मैंने मोबाइल खरीदा है । स्विच ऑन किए बैठा हूँ । कोई फोन आ नहीं रहा । बीच-बीच में चेक कर लेता हूँ । कहीं कोई गलत बटन तो नहीं दबा बैठा । मेरे पास ही दो प्रॉपर्टी डीलर और दो युवा लड़के बैठे हैं । उन्हें धड़ाधड़ फोन आ रहे हैं । दीवाली की शुभकामनाएँ आ रही हैं । ठीक है जो हमारा शुभ कर पाए, उसे ही तो शुभकामनाएँ दी जानी चाहिए । जो न कुछ दे सके, न फायदा कर सके, उसका क्या शुभ और उसकी क्या शुभकामनाएँ ।

मैंने कुछ दोस्तों को निर्देश दिए हैं कि फोन मोबाइल पर ही करना । ऑफिस का फोन ध्यान आकर्षित नहीं करता । मोबाइल फोन ध्यान खींचता है । जब तक मोबाइल दूसरे का ध्यान न बाँटे तब तक फोन का क्या मतलब है । जिंदगी में इतना कुछ करना है पर जिंदगी मुई छोटी है ।

अपनी और दूसरों की जिंदगी दाँव पर लगानी होती है । व्यस्तता का यह आलम है कि आदमी सड़क पर चलते-चलते फोन कर रहा है । पता नहीं कौन लोग हैं जो कहते हैं भारत और अमेरिका का मुकाबला नहीं किया जा सकता ।

'सेल' फोन से हम हीनता की ग्रंथि से मुक्त हुए हैं । सभी को साथी मिल गया है । एक-दूसरे से मिलकर बात कम करें, फोन पर ज्यादा करें । फोन पर आम बात भी खास लगती है । उसमें करेंट दौड़ जाता है । घर से ठीक-ठीक निकला आदमी ऑफिस पहुँचकर अपने पहुँचने की खबर दे रहा है । सब एकाएक एक-दूसरे के करीब हो गए हैं । मेरे हाथ में भी मोबाइल आ गया, उस मोबाइल से मुझे भी प्यार हो गया लेकिन कब से राह देख रहा हूँ मुफ्त में मिले सिम कार्ड से मोबाइल पर घंटी क्यों नहीं बजती ।

याद रखें, घोषित तौर पर अपना नुकसान करने वालों से फिर आप बच सकते हैं । कुछ अपनी सुरक्षा की तैयारी कर सकते हैं पर इन फायदा करने वालों से बचने की ज्यादा जरूरत है । यह हर हालत में आपका 'फायदा' करके ही मानेंगे । मैंने कई बार इन भला करने वालों को समझाया है कि क्यों मेरे पीछे पड़े हो । मुझे अपना भला नहीं करवाना है । ऐसे ही ठीक हूँ । भला करने वाला मेरी निष्क्रियता को नजरअंदाज करते हुए मेरे फायदे के नुस्खे समझा रहा है ''यह ले लो, वो फ्री । वो ले लो, ये फ्री ।''

पता नहीं वे कौन लोग हैं जो आए दिन 'जमाना बुरा है' कहकर एक-दूसरे को परेशान करते रहते हैं । यहाँ तो भला करने वाले परेशान करने की हद तक भला करने लगे हैं । बुरा करने वालों से आदमी सीधे टकरा जाए या किसी दूसरे की मदद माँग ले पर इन भला करने वालों को तो पहचानना ही मुश्किल है । आप तो बस प्लीज, मुझे किसी तरह इन भला करने वालों से बचाएँ ।

('झूठ बराबर तप नहीं' व्यंग्य संग्रह से)

शब्दार्थ :

विवरण = वर्णन, ब्योरा
दायरा = गोलघेरा
मोहभंग = भ्रांति निवारण
चुटकुला = मनोरंजक बात

स्वाध्याय

आकलन

१. (अ) लिखिए :

(१) लेखक की चिंता करने वाले –

.....

(२) लेखक का योग के प्रति मोह भंग हो गया है –

.....

(आ) कारण लिखिए –

लेखक की परेशानी के कारण

↓

(१) .....

(२) .....

(३) .....

शब्द संपदा

२. (अ) उपसर्गयुक्त शब्द लिखिए –

प्र
....

अ
....

वि
....

नि
....

(आ) प्रत्ययययुक्त शब्द लिखिए

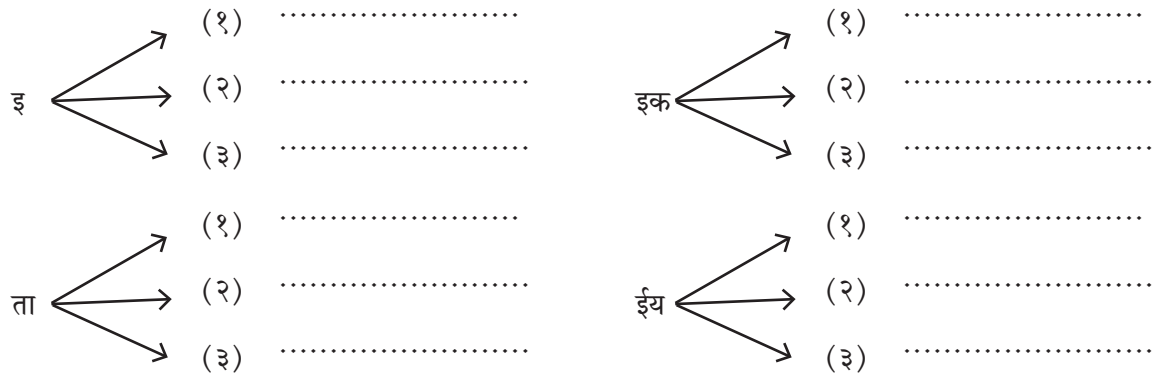

अभिव्यक्ति

३. मुफ्त में मिलने वाली चीजों के प्रति लोगों की मानसिकता को स्पष्ट कीजिए ।

पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) पाठ के आधार पर ग्राहकों की वर्तमान स्थिति का चित्रण कीजिए ।

(आ) अखबार के दफ्तर से आए दो युवाओं से मिले लेखक के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखिए ।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) राजेंद्र सहगल जी की साहित्यिक कृतियाँ –

(१) ..... (२) .....

(आ) अन्य व्यंग्य रचनाकारों के नाम –

....

....

६. निम्नलिखित रसों के उदाहरण लिखिए :

(१) वीर

.....

(२) करुण

.....

(३) भयानक

.....